पूर्ण पुरुष बनना

यह नोट्स फ्रैंकलीन के द्वारा तैयार किये गए हैं तथा यह पुरुषों के बाइबल अध्ययन से (के लिए) हैं।

1 शमूएल 17:4–11 तब पलिश्तियों की छावनी में से गोलियत नाम का एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसके डील की लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी।(5) उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहिने हुए था, जिसका तौल पांच हजार शेकेल पीतल का था।(6) उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे, और उस के कन्धों के बीच बरछी बन्धी थी।(7) उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे आगे चलता था। (8) वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के बोला, तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये क्यों पांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूं, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो?अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए।(9) यदि वह मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।(10) फिर वह पलिश्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली पांतियों को ललकारता हूं, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।(11) उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।।

- दो तरह के पुरुष – पहला विशाल, ज़बरदस्त विजेयता और दूसरा वो जो कुछ भी नहीं लगता।
- इस दानव में से हम किस रुपक को निकाल सकते हैं?

    - वह ''शरीर की अभिलाषा'' है जो अपने समस्त हथियारों के साथ हमें पराजित करने के लिए हमारी तरफ आ रहा है। ज़ोर से चुनौती देता हुआ – टी.वी. के माध्यम से

    - वह ''डर'' है। जो हमारी तरफ इस संसार के तर्क और ज्ञान के सहित पूरी ताकत के साथ आ रहा है। जैसे ही वो हमें बन्धुवाई में ले लेता और क्षीण कर देता है, हमारा विश्वास आन्धी में पत्तों की तरह मुरझा जाता है।

1 शमूएल 17:26–27 तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस पास खड़े थे पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? तब लोगों ने उस से वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उस से ऐसा ऐसा किया जाएगा।

- बाकि के सभी पुरुषों से दाऊद फर्क था। क्यों ?
- क्यों दाऊद महान विश्वास/निर्भय/ सही के लिए लड़ने को तैयार पुरुष था, बजाय इसके कि वह सुने कि बाकि के लोग क्या कहते हैं?

उत्तर:

प्रेरितों के काम 13:22–23 मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरे सारी इच्छा पूरी करेगा।

- यह परमेश्वर की ओर से कितनी विस्मयकारी गवाही है।

पूर्ण पुरुष बनना

दाऊद के समान पुरुष के लिए बहुत बड़ी आशिषें हैं :

1 शमूएल 17:25 जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी ब्याह देगा, और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा।

- हमारा राजा, परमेश्वर के राज्य का महाराजा है।
- जो ''दानव'' (अभिलाषा, भय) के ऊपर विजयी होगा, उसे बहुत सा धन प्राप्त होगा। उसका साथी चुनें। उसे स्वतन्त्र कर दें।

यूहन्ना 8:36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

1 शमूएल 17:45 दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है।

यिर्मयाह 17:7 धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है और जिसका भरोसा यहोवा ही है।

आप परमेश्वर के मन के अनुसार कैसे बन सकते हैं ?

- वैसे ही जैसे दाऊद ने किया।

I. दाऊद नम्र /आज्ञाकारी / और कठिन परिश्रम करने वाला था।

- वह अपने परिवार में सबसे छोटा था – बड़े भाईयों द्वारा दबाया हुआ।
- उसको परिवार के पशुओं को चराने का काम दिया गया, जो कठिन और अकेले का था। वह पशुओं के साथ एक एक सप्ताह या अधिकतर समय बाहर रहता। वह अकसर अपना लम्बा समय पेड़ों की टहनियां तोड़कर काटता, जिसमें वह निपुण हो गया था विशेषकर गोफन के सम्बन्ध में। (1 शमूएल 16:5,11; 17:28)

मत्ती 11:29 /लूका 1:52 / याकूब 4:6,10 / 1 पतरस 5:5,6 / रोमियों 12:3

नम्रता :

क) व्यवहार, दृष्टिकोण या आत्मा में दीनता और शालीनता के द्वारा अंकित होता है। अड़ियल या घमण्डी नहीं।

ख) सर्मपण और सम्मान प्रकट करनाः नम्रतापूर्ण क्षमायाचना

ग) पद, गुण या स्थिति में कमः निरभिमानी या दीनः नम्र कुटीर

II. बात–चीत (प्रार्थना) करने के लिए उसका निकटतम साथी स्वयं परमेश्वर था। और परमेश्वर दाऊद का सबसे घनिष्ठ और प्रिय मित्र बन गया।

जब आप किसी के साथ''प्रेम में'' होते हैं तो पहली चीज़ क्या है जो आप के मन में आती है और जिस के साथ आप बात करना या रहना चाहते हो : वो है जिससे आप प्यार करते हो, जिसके लिए आप सबसे अधिक तरसते हो।

दाऊद का यह अनुराग उसे बाकि लोगों से अलग खड़ा करता है।

भजन संहिता 27:4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।।

भजन संहिता 63:1 दाऊद का भजन जब वह यहूदा के जंगलों में था। हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और प्यासी, हां, निर्जल भूमि पर मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

- ''यत्न'' के इब्रानी शब्द का अर्थ शाब्दिक रुप से ''प्रारम्भ '' है। रुपक की तरहः किसी भी कार्य में पहले, यत्नपूवर्क अभिप्राय के साथ; या मेहनत के साथ ढूंढना।

भजन संहिता 5:3 हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूंगा।

भजन संहिता 88:13 हे यहोवा, मैंने तुझे सहायता के लिए पुकारा है, और भोर को मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख पहुंचती है।

भजन संहिता 141:2 मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्धित धूप, और मेरा हाथ उठाना सन्ध्या बलि ठहरे।

- दाऊद ने परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बना लिया। अपने अनुराग और उमंग के कारण उसका प्रति भोर पहला कार्य परमेश्वर के साथ समय बिताना था।
- दाऊद के समान पुरुष होना, इस पृथ्वी पर परमेश्वर का राजदूत होना है। हमें तड़के भोर को प्रार्थना करने वाले पुरुष बनना चाहिए।

मरकुस 1:35 यीशु के प्रार्थना करने का समय – भोर को दिन निकलने से बहुत पहिले

यूहन्ना 20:1 पहला व्यक्ति जिसने पुनरुत्थित यीशु को देखा।

उत्पत्ति 3:8 ऐसा लगता है प्रति भोर परमेश्वर दिन की शीतलता में आदम के साथ टहलने जाते थे।

निर्गमन 16:12–14, 18, 21 मन्ना का पाठ।

यीशु ने कहाः जीवन की रोटी मैं हूं (यूहन्ना 6:32–35)

निर्गमन 30:7–8 धूप, प्रार्थना का एक प्रतीक। प्रकाशितवाक्य 8:3–5

लैव्यव्यवस्था 6:12–13 याजक आग को पूरी तेज़ी से जलाते थे

नीतिवचन 3:9 प्रथम फल परमेश्वर का है।

भजन संहिता 5:3; 57:8; 63:1; 90:14; 119:147; दाऊद को रहस्य पता था।

भजन संहिता 27:5; 31:19–20; 32:6–7; 61:1–4 गुप्त स्थान

यशायाह 50:4 प्रतिभोर वह मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य समान सुनूं।

निर्गमन 33:12–33

पद 12: तब मूसा ने यहोवा से कहा, '' ... तूने कहा है, 'मैं तुझे नाम से जानता हूं, और तू मेरी कृपा दृष्टि (अनुग्रह) का पात्र भी है' ।''

- वह आपका नाम जानता है:

यशायाह 43:1–4 मैंनें तुझे छुड़ा लिया है: मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है; तू मेरा ही है। तू मेरी दृष्टि में अनमोल और प्रतिष्ठित है और मैं तुझ से प्रेम करता हूं।''

लूका 10:20 ... इस बात से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।

प्रकाशितवाक्य 13:8 जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन की पुस्तक में लिखे गए।

- आपका स्वर्गीय पिता आपका नाम जानता है और उसने आपका नाम लिखा है।
- ठीक उसी प्रकार जैसे आपके जन्म के समय आपके संसारिक माता–पिता ने आपका नाम रखा और जन्म प्रमाण पत्र में लिखवाया।

- कृपा दृष्टि (खारीज़) जिसका अनुवाद : अनुग्रह ; आनन्द, भी किया गया है।

पद 13 : इसलिए अब मैं तुझ से विनती करता हूं, यदि तेरी कृपा दृष्टि (अनुग्रह) मुझ पर है, तो मुझे अपने मार्ग समझा दे, कि मैं तुझे जान सकूं, जिससे मैं तेरी **कृपा दृष्टि** प्राप्त करूं। यह भी ध्यान रख कि यह जाति तेरी ही प्रजा है।

- जलती हुई झाड़ी/ फिरौन के सामने/महामारियां/ लाल समुद्र का दो भाग होना/ मन्ना/बटेर/चट्टान में से पानी/ गरजना और बिजली चमकना – आग और धूंआ, और सीनै पर्वत पर कंपन/तथा परमेश्वर का बोलना और दस आज्ञाओं का देना : इन सब का सामना करने के बादः मूसा एहसास करता है कि :

- यहोवा कहता है, ''मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग और मेरे मार्ग एक जैसे हैं। क्योंकि मेरे और तुम्हारे मार्गों में और मेरे और तुम्हारे सोच–विचारों में आकाश और पृथ्वी का अन्तर है। यशायाह 55:8–9

- मूसा की प्रार्थना पहचानते हुए: ''मुझे अपने मार्गों को समझा दे कि मैं तुझे जान सकूं।''

परमेश्वर को बेहतर और घनिष्ठता से जानना – आरम्भ होता है उसके मार्गों को जानने से, जो उसके लिखित वचनों और बोले गए शब्दों (प्रार्थना) में एक साथ अच्छा समय बिताने के द्वारा सीख सकते हैं।

- ''जिससे मैं तेरी **कृपा दृष्टि** प्राप्त करूं (अधिक)। पद 13
  उन बातो को कर के जिनसे आप प्रसन्न होते हैं।

  - मूसा की तीव्र इच्छा थी कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करे।
    हमें भी मूसा के समान प्रार्थना करनी चाहिए :

    - इसलिए अब मैं तुझ से विनती करता हूं, यदि तेरी कृपा दृष्टि (अनुग्रह) मुझ पर है, तो मुझे अपने मार्ग समझा दे, कि मैं तुझे जान सकूं, जिससे मैं तेरी **कृपा दृष्टि** प्राप्त करूं (और अधिक)।

और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।। लूका 2:52

- यदि यीशु इस प्रकार बढ़े – तो हमें कितना और बढ़ना चाहिए।

- स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।(लूका 1:30) > उसके पवित्र और भक्तिपूर्ण जीवन के कारण <

- 1 पतरस 2:19– 20 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है(जैसा यीशु ने सहा), तो यह सुहावना (खारीज़ : या अच्छा) है।(20) क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे खाए और धीरज धरा, तो उस में क्या बड़ाई की बात है?पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है।

  - हम परमेश्वर से कृपा या अनुग्रह तब प्राप्त करते हैं जब हम यीशु के समान अपने जीवन को जीते हैं – ''कठोर बरताव सहते और धीरज धरते हुए।
    - अय्यूब इसका अच्छा उदाहरण है (अय्यूब 1:1–22)।
      अय्यूब 13:15 ''चाहे वह मुझे घात करे, फिर भी मैं उसमें आशा रखूंगा।''

    - इब्रानियों 11 के सारे विश्वास के वीर इसके उदाहरण हैं:
      पद 39 ''विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई''। हालांकि उन्हें तिरस्कार और बहुत दुख उठाना पड़ा।

    - ''विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसके उठाए जाने से पहिल उस की यह गवाही दी गई थी, कि उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।''
      इब्रानियों 11:5

पूर्ण पुरुष बनना

1 पतरस 2:21–25 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।(22) न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।(23) वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।(24) वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।(25) क्योंकि तुम पहिले भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे, पर अब अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास फिर आ गए हो।

- पौलुस के कांटे और कष्ट के प्रतिउत्तर में परमेश्वर ने कहा: "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।" 2 कुरिन्थियों 12:9

    - परमेश्वर का अनुग्रह या कृपा, सामर्थ के साथ आती या दी जाती है।

- देने वाले जीवन के प्रतिउत्तर में परमेश्वर कहते हैं :
  क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। 2 कुरिन्थियों 9:7–8

- परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से इतना प्रेम करते हैं कि वह आपको अपनी कृपा, अपना अनुग्रह देगा, जिससे हर एक भले कार्य के लिए आपके पास देने के लिए हो। उसका कार्य करने के लिए वह आपको सशक्त करेगा।

- अतः हम देखते हैं कि हम "उसके मार्गों को जान कर" तथा उन्हें करने के द्वारा परमेश्वर की कृपा के साथ बढ़ सकते हैं – आज्ञाकारिता।

    - उत्पत्ति 6:8 परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी

    - प्रेरितों के काम 7:46 दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया

- भजन संहिता 27:11 हे यहोवा, मुझे अपने मार्ग सिखा।

- दाऊद उसके मार्गों को प्रार्थना द्वारा उसके वचनों से जानता था।

    - गलातियों 1:10 अब मैं क्या मनुष्यों को मानता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता।।

- यह बहुत गंभीर प्रशन है जिसके लिए यह अच्छा होगा कि हम ईमानदारी से इसका उत्तर दें। हम किसे प्रसन्न करना चाहते हैं?

पूर्ण पुरुष बनना

1 थिस्सलुनीकियों 4:1 हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है (परमेश्वर के "मार्गों" में), और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ।

- जब आप परमेश्वर के साथ उसके वचनों और प्रार्थना में समय बिताना सीखेंगे, आप उसके मार्गों को जानेंगे।

- जितना अधिक आप उसके मार्गों में चलेंगे, उतना अधिक आप उसको प्रसन्न करेंगे, वह आपको और अधिक कृपा और अनुग्रह देगा।

मूसा की विनती "मुझे अपने मार्ग समझा दे, कि मैं तुझे जान सकूं" के प्रतिउत्तर में परमेश्वर का जवाब था:
निर्गमन 33:14 "मैं तेरे साथ-साथ चलूंगा, और तुझे विश्राम दूंगा।"

- मूसा के पास "परमेश्वर का वचन" था, और वह प्रार्थना करने वाला पुरुष था।
- और अब मूसा के पास साथ-साथ चलने के लिए, उससे बात करने के लिए स्वयं परमेश्वर थे, और उसे यह बताने के लिए कि प्रत्येक परिस्थिति में उसे परमेश्वर का वचन कैसे जीना है, यही "परमेश्वर के मार्गों को समझना" है।

तथा परमेश्वर का वायदा आपके लिए भी है:

"मैं तेरे साथ-साथ चलूंगा, और तुझे विश्राम दूंगा।"
आपको यह बताने के लिए कि प्रत्येक परिस्थिति में हमें परमेश्वर का वचन कैसे जीना है और इससे हम "उसके मार्गों को समझें"।

- मत्ती 28:20 **मैं** जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।।
- यूहन्ना 14:16 **मैं** पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
- इब्रानियों 13:5 परमेश्वर ने कहा, "**मैं** तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।"

निर्गमन 33:15 तब मूसा ने कहा, "**यदि तू हमारे साथ न जाए, तो हमें यहां से आगे न ले जा**"।

हमारा यही रवैया होना चाहिए! अपने साथ उसकी उपस्थिति को **जानने** वाले, और अपने साथ उसकी उपस्थिति के ऊपर **निर्भर**।

- नीतिवचन 3:5-6 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके (उसकी उपस्थिति) सब काम करना, तब वे तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

निर्गमन 33:16 क्योंकि, तब यह कैसे ज्ञात हो सकेगा कि न केवल मैने तेरी कृपा–दृष्टि प्राप्त की है, परन्तु तेरी प्रजा ने भी? क्या इससे नहीं, कि तू हमारे संग संग चले, जिससे कि मैं और तेरी प्रजा, उन सब लोगों से अलग ठहरें जो इस पृथ्वी पर है?

उसकी उपस्थिति हमें बाकी सब लोगों से अलग करती है।

हमें अपने आप से पूछना हैः

- क्या मैं बाकी सब लोगों से भिन्न हूं?
- क्या दूसरे लोग यह देखते और जानते हैं कि उसकी उपस्थिति मुझे भिन्न बनती है?
- हम यीशु के समान यह बोलने के योग्य हों : ''मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया ...'' यूहन्ना 17:6

- यदि आप के हृदय की भी यही इच्छा है जो मूसा की थी, तो परमेश्वर कहता हैः

निर्गमन 33:17 ''मैं यह काम भी जिसके विषय में तूने कहा है, करुंगा; क्योंकि तू ने मेरी कृपा दृष्टि प्राप्त की है और मैं तुझे नाम से जानता हूं।''

- यह महसूस करना आरम्भ करते हुए कि उस पर परमेश्वर की कृपा दृष्टि है ... मूसा हियाव बान्ध कर पूछता है :

निर्गमन 33:18 तब मूसा ने कहा, ''मैं तुझ से विनती करता हूं, मुझे अपना तेज दिखा।''

- परमेश्वर को ''जानने'' की उसकी इच्छा, उसकी भूख ने परमेश्वर को प्रसन्न किया, और परमेश्वर का प्रतिउत्तर थाः

निर्गमन 33:19–20 मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊंगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूंगा, [प्रकाशन] और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और जिस पर दया करना चांहू उसी पर दया करूंगा। फिर उस ने कहा, तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता; क्योंकि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता।

निर्गमन 33:21–23 फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे समीप एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो; (22) और जब तक मेरा तेज तेरे सामने होके चलता रहे तब तक मै तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे सामने होकर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपें रखूंगा (23) फिर मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का दर्शन नहीं मिलेगा।।

- ''चट्टान पर'' – ''मेरे उद्धार की चट्टान''। 2 शमूएल 22:47; भजन संहिता 89:26

- "मेरे समीप एक स्थान है", एक विशेष स्थान

- "परमेश्वर के मन के अनुसार" दाऊद ने भी "गुप्त स्थान" के लिए कहा:

भजन संहिता 27:5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।

भजन संहिता 27:4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।।

भजन संहिता 27:7–9 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे। तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूंगा। अपना मुख मुझ से न छिपा।।

भजन संहिता 31:20 तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा; तू इन्हें अपने शरण स्थान में छिपाए रखकर झगड़ालू जीभ से बचाता है।

श्रेष्ठगीत 2:14 ओ मेरी कबूतरी! चट्टानों की दरारों में, सीधी ऊंची चढ़ाइयों के गुप्त स्थान में, मैं तेरा रुप देख पाऊं, मैं तेरी वाणी सुन पाऊं, क्योंकि तेरी वाणी मधुर है और तेरा रुप मनोहर है।

- गुप्त स्थान, परमेश्वर के साथ संगति और घनिष्ठता का एक विशेष स्थान है। यह केवल उनका स्थान है जो परमेश्वर की महिमा के लिए उत्साहपूर्ण उमंग को रखते हैं।

- उसके तेज को देखने की मूसा के हृदय की तीव्र इच्छा के समान ही यीशु की हमारे लिए इच्छा है कि हम उसके तेज को देखें।

यूहन्ना 17:24 हे पिता, मै चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं, वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।

- 2 कुरिन्थियों 3:18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं।।

- दर्पण – जैसे सृष्टि उसे प्रतिबिम्बित करती है वैसे ही उसके लोग और उसका वचन भी उसे प्रतिबिम्बित करता है।

- जब हम इस प्रकार के उत्साह से परमेश्वर का पालन करते हैं – यह हमें उसके स्वरुप में और अधिक रुपान्तरित और बदल देता है ... तेजस्वी रुप में अंश अंश करके।

- उसी उद्देश्य के लिए जो उसके पुत्र का था : "हे पिता ... अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।" यूहन्ना 17:1

- इस पृथ्वी पर हमारा यही उद्देश्य है। "जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। " यूहन्ना 17:18

- हमारा भी वही मिशन है जो यीशु का था:"कि पुत्र पिता की महिमा करे"

- तो फिर हम यीशु के साथ बोल सकते हैं : "जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।" यूहन्ना 17:4

और

मैं ने तेरा नाम ... प्रगट किया... यूहन्ना 17:6

यीशु ने अपने पिता के नाम से पहचान कराई :

यूहन्ना 17:6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दियाः वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है।

यूहन्ना 17:26 और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूं।।

प्रशन यह है: क्या आप में इस प्रकार का अनुराग और परमेश्वर की महिमा को देखने और प्रचार करने की इच्छा है?

इसके लिए चाहिए : भजन संहिता 63:1 हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न (शाब्दिकः भोर को) से ढूंढूंगा; सूखी और प्यासी, हां, निर्जल भूमि पर मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।

श्रेष्ठगीत 7:12 हम तड़के उठ कर ...

III. एक प्रेम सम्बन्ध में केवल बात–चीत(प्रार्थना) ही सम्मिलित नहीं होती परन्तु यह हमारे होंठों और हृदय में गीत डालता है – आराधना

भजन संहिता 59:16 परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य के गीत गाऊंगा, और भोर को तेरी करूणा का जय जयकार करूंगा। क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है।

भजन संहिता 90:14 भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर कि हम जीवन भर जय जयकार और आनन्द करते रहें।

भजन संहिता 92:2 प्रातःकाल तेरी करुणा की और रात्रि को तेरी सच्चाई की चर्चा ... की जाए।

भजन संहिता 143:8 प्रातःकाल मुझे अपनी करुणा के वचन सुना; क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूं; मुझे उस मार्ग की शिक्षा दे जिसमें मुझे चलना चाहिए; क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूं।

IV. दाऊद परमेश्वर के किसी भी वचन की, चाहे लिखा हो या बोला गया हो, कदर करता था और उसके अनुसार जीता था। (मत्ती 7:24–27)

भजन संहिता 119:1–3 क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं! क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं! फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते, वे उसके मार्गो में चलते हैं।

पद 5 भला होता कि तेरी विधियों के मानने के लिये मेरा चालचलन दृढ़ हो जाए!

पद 8 मैं तेरी विधियों को मानूंगा। दाऊद की वचनबद्धता

पद 9–11 जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से। मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूं; मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे! मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरूद्ध पाप न करूं।

पद 13–16 दाऊद की वचनबद्धता तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन, मैं ने अपने मुंह से किया है। मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से, मानों सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूं। मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा, और तेरे मार्गो की ओर दृष्टि रखूंगा। मैं तेरी विधियों से सुख पाऊंगा; और तेरे वचन को न भूलूंगा।।

पद 18 मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।

पद 20 मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है।

पद 24 तेरी चितौनियां मेरा सुखमूल और वे मेरी सलाहकार हैं।

पद 26–27 मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया है और तू ने मेरी बात मान ली है; तू मुझ को अपनी विधियां सिखा ! अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता, तब मैं तेरे आश्यर्चकर्मो पर ध्यान करूंगा।

पद 31 मैं तेरी चितौनियों में लवलीन हूं

पद 32 जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा, तब मैं तेरी आज्ञाओ के मार्ग में दौडूंगा।।

पद 33–36 हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे; तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा। मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा। अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला, क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं। मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे।

पद 44 तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार, सदा सर्वदा चलता रहूंगा

पद 45 और मैं चोड़े स्थान (या स्वतन्त्रता) में चला फिरा करूंगा, क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है।

पद 47 क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूं, और मैं उन से प्रीति रखता हूं।

पद 48 मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में मैं प्रीति रखता हूं, हाथ फैलाऊंगा और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा।।

पद 51 मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।

पद 54 जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं, वहां तेरी विधियां, मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।

पद 57 यहोवा मेरा भाग है; मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।

पद 59 मैं ने अपनी चालचलन को सोचा, और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।

पद 62 तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा।

पद 63 जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं, उनका मैं संगी हूं।

पद 67 उस से पहिले कि मैं दुःखित हुआ, मैं भटकता था; परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूं।

पद 71–72 मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है, जिस से मैं तेरी विधियों को सीख सकूं। तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये सोने और चांदी के हज़ारों सिक्कों से भी उत्तम है।।

पद 74 मैं ने तेरे वचन पर आशा लगाई है।

पद 82 मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की बाट जोहते जोहते रह गई है

पद 89 हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।

पद 92 यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता, तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता।

पद 93 मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा; क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है।

पद 97 अहा ! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।

पद 98–104 तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है, क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं। मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं, क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है। मैं पुरनियों से भी समझदार हूं, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूं। मैं ने अपने पांवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है, जिस से मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं। मैं तेरे नियमों से नहीं हटा, क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है। तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं ! तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं, इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं।।

रोमियों 10:17 सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।

V. अन्य सारी इच्छाओं के ऊपर परमेश्वर के लिए दाऊद का प्रेम (भजन संहिता 27:4) उसे उस स्थिति में ले आया कि वह अपने उद्देश्य को पूर्णतः प्राप्त कर ले – राजा के रुप में राज करने का (1 शमूएल 16:12–13)। हम भी ''पृथ्वी पर राज'' करेंगे (प्रकाशितवाक्य 5:10)।

VI. परमेश्वर के साथ दाऊद की घनिष्ठता ने उसमें महान विश्वास उत्पन्न किया जिसे हम परमेश्वर के शत्रुओं के लिए उसके धर्मी क्रोध और असाधारण साहस में देख सकते हैं। दाऊद योद्धा था। क्यों?

भजन संहिता 97 : 10 तुम जो परमेश्वर से प्रेम रखते हो, बुराई से घृणा करो। वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता, और उन्हें दुष्टों के हाथ से छुड़ाता है।

1 शमूएल 17:26 वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?

1 शमूएल 17:32 तब दाऊद ने शाऊल से कहा, किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा।

1 शमूएल 17:37 फिर दाऊद ने कहा, यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। शाऊल ने दाऊद से कहा, जा, यहोवा तेरे साथ रहे।

दाऊद ने अनेक निजी और व्यक्तिगत यद्ध लड़े और जीतें जिसके कारण उसके चरित्र की शक्ति और खराई विकसित हुई।

खराई – धर्मी आचरण और नैतिकता का दृढ़ता से पालन।

इन युद्धों की जीत ने उसे सार्वजनिक विजयों के लिए तैयार किया।

1 शमूएल 17:45–46 दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है।(46) आज के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझ को मारूंगा ...

सार्वजनिक लड़ाईयां या तो पहले की छिपी कमज़ोरियों को प्रकट कर देता है या शक्ति को।

- उदाहरणः यूसुफ (उत्पत्ति 37) – पिता से कृपा और दो स्वप्नों के साथ अपरिपक्वता और शायद घमण्ड, जिसका परिणाम उसके भाईयों की ईर्ष्या और उसको मारने की योजना।

राजा शाऊल की विजयों ने पुरुष की कृपा तथा अपने आप को महिमा मिलने की इच्छा जैसी कमज़ोरियों को उजागर किया, जो परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता में परिवर्तित होता है (1 शमूएल 15)।

हमें घमण्ड (याकूब 4:6), ''गर्जने वाला सिंह'' (शैतान 1 पतरस 5:8), और हर ले जाने वाले ''रीछ'' की वासना की भूख से व्यक्तिगत लड़ाईयों को जीतना है।

- यूसुफ (उत्पत्ति 39:6–25)

दाऊद और यूसुफ को अपनी मन्ज़िल प्राप्त करने की तैयारी में कई वर्ष लगे जिससे कि वे सिंहासन की ज़िम्मेदारियों के लिए तैयार हो सकें।

हम सभी इन परिक्षाओं और परख का सामना करते हैं जिससे हम तैयार हो सकें, हमें भी राज और शासन करने के लिए निंधारित किया गया है।

प्रकाशितवाक्य 5:10 और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

जितनी अधिक आप परिक्षाएं पास करेंगे – आप की ईमानदारी बढ़ेगी – परमेश्वर आप पर ज़्यादा ज़िम्मेदारियां देने का भरोसा करेंगे।

याकूब 1:2–4; 12–14 // 1 तिमुथियुस 2:20–22 // 2 पतरस 1:1–11 // रोमियों 5:3–4

यदि आपके पास परमेश्वर के लिए प्रबल प्रेम नहीं है – जो उसके वचन के प्रेम के लिए प्रेरणा देता है – आप खड़े नहीं रह सकते – आप परीक्षा पास नहीं कर सकते – परीक्षा के समय में। (लूका 4:4,8,12)।

दाऊद का जीवन उन शिक्षाओं से भरा है। जब हम जीवन के मार्ग में यात्रा करते हैं तो मन्ज़िल प्राप्त कर पाने में यह शिक्षाएं हमें तैयार करती हैं।

VII. अस्वीकृति के पाठ से सीख

i) अपने भाईयों द्वारा त्यागा हुआ (1 शमूएल 17:22–30)

- पद 26 इस बारे में कि "क्या किया जाएगा ..." और पद 30 के प्रशन क्यों ?
- पद 28 किस बात ने एलीआब की प्रतिक्रिया को प्रेरित किया?

  (शर्मिंदगी, भय, ईर्ष्या, क्रोध)
- क्या आपको अपने भूत काल में या वर्त्तमान में कुछ ऐसा याद आता है?
- आप कौन से भाई हैं, छोटे या बड़े?
- पद 29, दाऊद का बचाव। क्या वह निर्दोष था?
- पद 30 अस्वीकरण का परिणाम –≫ टूटे सम्बन्ध

याकूब 3:16 इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

ii) गोलियत को मारने के बाद दाऊद को राजा शाऊल अपने महल में ले गया और उसे इस्राएल की सेना के ऊपर ठहराया। जब दाऊद की लोकप्रियता बढ़ गई, तो उसके साथ शाऊल की ईर्ष्या भी बढ़ गई और दाऊद को एक दशक से भी अधिक समय तक शाऊल की अस्वीकृति के भालों से बचना पड़ा। (1 शमूएल 18 से आगे)।

- पद 8 ''अति क्रोधित'' शब्द का अर्थ : क्रोध या ईर्ष्या से जल जाना
- पद 9 ''ताक में लगा रहा''
- पद 10 ''परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा''? शाऊल परमेश्वर का था परन्तु उसके ईर्ष्या के पाप ने शैतान को उसके ऊपर वैध अधिकार दिया, और परमेश्वर ने उसको अनुमति दे दी।

याकूब 3:16 इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

- ईर्ष्या का मूल कारण क्या है?
  - स्वार्थी महत्वाकांक्षाएं /अपने को कम आंकना/अपरिपक्वता/ अपनी पद, प्रतिष्ठा खो जाने का भय (1 शमूएल 18:12)
- ईर्ष्या कहां विद्यमान रहती है?
  - कार्य/ उनकी ओर जो अधिक सम्पन्न हैं/ सेविकाई

मरकुस 15:10 क्योंकि वह जानता था, कि महायाजकों ने उसे (यीशु) डाह (या ईर्ष्या) से पकड़वाया था।

- 18:11 ईर्ष्या का परिणाम, एक प्रकार या अन्य प्रकार के ''भाला फेंकने'' में होता है।
  - अपमान/ नीचा दिखाना/ मारना/... क्रूस पर चढ़ा देना
  - आपने अपना आखरी भाला कब फेंका था?

- 18:13 ''शाऊल ने उसको अपने पास से अलग कर दिया''
  - जब हमारे ऊपर ''अस्वीकृति की आत्मा'' आती है :

क) हम दूसरे व्यक्ति को नीचे गिराते हैं, उसकी उन्नति रोकने का प्रयास करते हैं

ख) हम दूसरों को परे धकेल देते हैं : अपने शरीर के भावों से//उन्हें नज़रअन्दाज़ करके//और या उनसे शारीरिक और शाब्दिक दुर्व्यवहार करके।

iii) शाऊल की अस्वीकृति ने दाऊद को सिंहासन से (उसकी मन्ज़िल) दूर कर दिया और अपने जीवन में परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने की योग्यता को परखा।

याकूब 1:2–4 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो (3) तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।(4) पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।।

iv) दाऊद ने भाले वापस करने से इनकार कर दिया – हमें भी इनकार करना चाहिए।

- 1 शमूएल 24:10 ''मैं अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।''

- मत्ती 5:39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करता; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे।

  - थप्पड़ के समान या उससे भी ज़्यादा चोट दुख पहुंचाने वाले शब्द होते हैं।

- याकूब 4:11 हे भाइयों, एक दूसरे की बदनामी न करो, जो अपने भाई की बदनामी करता है, या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था की बदनामी करता है, और व्यवस्था पर दोष लगाता है''

  - हम कितना अधिक यह काम करते हैं – दूसरों के विरुद्ध बोलना ?

- 1 पतरस 2:21–24 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।(22) न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।(23) वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था।

- याकूब 3:6 जीभ भी एक आग हैः जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।

- याकूब 3:8 पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रूकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है।

v) इन सारे भालों के बावजूद, दाऊद ने कभी भी ''मेरा सब कुछ ले लो''वाला दृष्टिकोण या रोना पीटना नहीं दिखाया जिसका परिणाम ''अस्वीकृति की आत्मा'' का घर करना हो सकता था।

- रोमियों 12:14 अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो शाप न दो।

- रोमियों 12:17 बुराई के बदले किसी से बुराई न करो।

- लूका 6:27–29 परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो। जो तुम्हें शाप दें, उन को आशीष दोः जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिये प्रार्थना करो। जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे; और जो तेरा कोट छीन ले, उस को कुरता लेने से भी न रोक।

vi) अस्वीकरण दूसरे लोगों को आकर्षित करता है जो अस्वीकृत है, जिन्हे बाहर निकाल दिया गया है। अतः ''हम और वे'' का निर्माण हो जाता है जो प्रतिद्वन्द्वी मनोवृति है।

- 1 शमूएल 22:1–2 और दाऊद वहां से चला, और अदुल्लाम की गुफा में पहुंचकर बच गया; और यह सुनकर **उसके भाई**, वरन उसके पिता का समस्त घराना वहां उसके पास गया। और जितने **संकट** में पड़े थे, और जितने **ऋणी** थे, और जितने **असंतुष्ट** थे, वे एक उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उन सबका प्रधान हुआ। वहां उसके साथ कोई चार सौ पुरूष उसके साथ हो गए।।

  - उसके भाई क्यों? क्या उन्होंने अपना दृष्टिकोण बदल लिया?
  - संकट – कठिन स्थान // असंतुष्ट – क्रोध, मन की कड़वाहट
  - बाद में असंतुष्टों के सेना बढ़कर छः सौ हो गई (23:13)

vii) हालांकि दाऊद समय समय पर अस्वीकृत हुआ, उसका पीछा किया गया और उस पर हमला हुआ, परन्तु उसने कभी ''अस्वीकृति की आत्मा'' को अपने ऊपर टिकने नहीं दिया, न ही उसने पलट वार किया या अस्वीकृति का बदला अस्वीकृति से दिया।

viii) 1 शमूएल 24:3–4 जब वह मार्ग पर के भेड़शालों के पास पहुंचा जहां एक गुफा थी, तब शाऊल शौच के लिए उसके भीतर गया। और उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे।(4) तब दाऊद के जनों ने उस से कहा, सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा, कि तू उस से मनमाना बर्ताव कर ले। तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की छोर में से चुपके से कुछ काट लिया।

- दाऊद के प्रतिशोध की पहली क्रिया

1 शमूएल 24:5 इसके बाद दाऊद का विवेक उसको काटने लगा, क्योंकि उसने शाऊल के बागे की छोर काट ली थी।

- क्या ''किसी को काटने'' के बाद हमारा विवेक भी इतना संवेदनशील है।
  - प्रेरितों के काम 23:1 पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, हे भाइयों, मैं ने आज तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया।
  - प्रेरितों के काम 24:16 इस से मैं आप भी यत्न करता हूं, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।
  - 1 तीमुथियस 1:5 आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।

- 1 तीमुथियस 1:19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामें रहे जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।
- 1 तीमुथियस 3:9 पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें।
- तीतुस 1:15 शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं: वरन उन की बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।

• दूसरों के द्वारा दी गई सलाह हमें सावधानीपूर्वक जांच करके लेनी चाहिए (24:4)। वह सलाह कहां से आ रही है? इसके पीछे उनका उद्देश्य क्या है?

- लूका 12:57 और तुम आप ही निर्णय क्यों नहीं कर लेते, कि उचित क्या है?

  हम कैसे जानें कि क्या सही है?

- यूहन्ना 5:30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं।
- यूहन्ना 7:24 मुंह देखा न्याय मत करो, परन्तु धार्मिकता से न्याय करो।

ix) हमें दूसरे लोगों को भाला फेंकने से रोकने का हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए।

• 1 शमूएल 26:9

- भजन 105:15
- रोमियों 12:19

• दाऊद ने अपने किसी आदमी को भाला फेंकने की अनुमति नहीं दी। वे उसके अनुयायी थे जो साहस, धार्मिकता और ईमानदारी के मार्ग में प्रशिक्षित हुए थे और वे ''पराक्रमी पुरुष'' बनें।

- यह नेतृत्व है।
- यह परमेश्वर के राज्य में परिपक्वता को प्रदर्शित करता है।
- यह राजा का हृदय है। वह जन जो दूसरो पर सेवक के समान शासन करने के लिए तैयार है। जिसकी सम्पूर्ण इच्छा है कि लोगों की उन्नति, सफलता और सम्पन्नता में वह सहायता करे।

x) 1 शमूएल 23:1,5, 12 दाऊद की अस्वीकृति ने उस समय तीव्रता पकड़ ली जब उसने कीला नगर को पलिशतियों के हाथ से छुड़ाया, और फिर उसने यह जाना कि उसकी सहायता करने के बजाय वही लोग उसे अस्वीकार कर देंगे और उसे शाऊल के हवाले कर देंगे।

एक बार फिर भाग जाता है और समय समय पर बार बार वह पलट वार करने से इनकार करता है।

- क्या भागना कमज़ोरी की निशानी है?
  - मत्ती 10:23 जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।।
  - 1 कुरिन्थियों 6:18 व्यभिचार से भागो
  - 1 तीमुथियुस 6:11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का पीछा कर।
  - 2 तीमुथियुस 2:22 जवानी की अभिलाषाओं से भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप का पीछा कर।

xi) 1 शमूएल 27–28 आखिरकार दाऊद को अपना देश इस्राएल छोड़ना पड़ा। वह पलिश्तियों के देश चला गया और राजा आकीश ने दाऊद और उसके छः सौ पुरुषों को सिकलग नगर दे दिया।

xii) 1 शमूएल 29 पलिश्ती इस्राएल से युद्ध करने जा रहे हैं, दाऊद और उसके साथी उनके साथ हैं, परन्तु उन्होंने दाऊद को वापस यह कह कर भेज दिया कि वह इस्राएलियों के लिए लड़े। सिकलग लौटकर उन्होंने नगर जला हुआ पाया और आक्रमणकारी उनके परिवारों को बन्धुवाई में ले गए। और अब सबसे बड़ी अस्वीकृति, वे लोग जिनसे दाऊद ने प्रेम किया था, जिनका और जिनके परिवारों का उसने भरण–पोषण किया, वही लोग अब दाऊद को भी अस्वीकृत करने के लिए तैयार थे।(1 शमूएल 30)

- 1 शमूएल 30:6 और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बान्धा।।

- जब दूसरे लोग आपके विरुद्ध हो जाएं//आपको अस्वीकृत कर दें :
  - आप हिम्मत पाने के लिए किसकी ओर मुड़ते हैं?
  - वह कौन है जिसकी ओर आप मुड़ते हैं?

xiii) परमेश्वर में हियाव प्राप्त कर दाऊद दबाव में टूट जाने से बच गया, इस कारण उसका प्राण बच गया तथा उसे एक और विजय प्राप्त हुई। दाऊद ने अपना ध्यान परमेश्वर पर केन्द्रित रखा न कि अपने पर या परिथितियों के ऊपर। उसने परमेश्वर से अगुवाई प्राप्त की। दाऊद ने पुरुषों को वापस उद्देश्य, दर्शन तथा उनके जीवनों के लिए बुलाया – उन्होंने अपने परिवारों को बचा लिया। (1 शमूएल 30:16–20)

- ○ यह नेतृत्व है।
- ○ यह परमेश्वर के राज्य में परिपक्वता को प्रदर्शित करता है।
- ○ यह राजा का हृदय है। वह जन जो दूसरो पर सेवक के समान शासन करने के लिए तैयार है। जिसकी सम्पूर्ण इच्छा है कि लोगों की उन्नति, सफलता और सम्पन्नता में वह सहायता करे।

हमें इन बातों के प्रति सही रीति से प्रतिक्रिया करना सीखना चाहिए न कि इनके विरुद्ध प्रतिक्रियाः अस्वीकृति , दूसरों के द्वारा आक्रमण और अपने जीवन में समस्याएं।

और जब हम सही रीति से इसका प्रतिउत्तर देंगें तो परमेश्वर इन बातों का कारण होंगेः

क) कि यह बातें हमारी भलाई के लिए कार्य करें और भविष्य में होने वाली और भयानक परिस्थितियों से हमें बचाए। रोमियों 8:28

ख) और हमारा सही प्रतिउत्तर हमें हमारे लक्ष्य के लिए तैयार करे।

- सच्चे विश्वासी के रुप मेंः
  - पाप के दण्ड से ''हम बचाए गए हैं'' (इफिसियों 2:5,8) तथा हमारे पास अनन्त जीवन है। हमारा भाग केवल विश्वास करना है।
  - हम अभी पाप के सामर्थ से ''बचाए जा रहे हैं'' (1 कुरिन्थियों 1:18) और इस प्रकार और शैतान के प्रहार से भी। हमारा भाग परमेश्वर और उसके वचन की आज्ञा मानना है, यह सही रीति से प्रतिउत्तर देना है।

फिलिप्पियों 2:12–13 सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो ... डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। (13) क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए तुम में सक्रिय है।

दाऊद का जीवन हमारे लिए उदाहरण है जो हमें प्रेरित करता है कि हम ऐसे जीवन का अनुसरण करें जो (1) परमेश्वर में साहस ढूंढें (2) परमेश्वर से कृपा और घनिष्ठता प्राप्त करे।

xiv) परमेश्वर के दिए गए लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हमारी भागीदारी आवश्यक है।

यीशु स्वयं : बुद्धि और डील-डौल (परिपक्वता) में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।। (लूका 2:52)

हम किस तरह से बुद्धि, परिपक्वता और अनुग्रह में बढ़ सकते हैं?

- जैसे मूसा ने प्रार्थना की : ''मुझे अपने मार्ग समझा दे'' (निर्गमन 33:13)

यूहन्ना 5:19 ''...पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है...''

यूहन्ना 8:38 मैं वही कहता हूं, जो अपने पिता के यहां देखा है

- उसने अपनी सेवा अपनी ईश्वरीय रुप के द्वारा नहीं परन्तु मनुष्य के रुप में पूरी की जिसमें उसने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। वह हमारा आदर्श है।
- ''मनुष्यों द्वारा अस्वीकृत हुआ'', और बहुत दुख भोगा, यहां तक कि मृत्यु तक (फिलिप्पियों 2:8)
- वह : ''हमारी नाई परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।'' (इब्रानियों 4:15)। फिर भी पिता का आज्ञाकारी रहा।
- इस प्रकार यीशु परमेश्वर के साथ अनुग्रह में बढ़ता गया तथा उसी प्रकार हमें भी परमेश्वर के साथ अनुग्रह में बढ़ना चाहिए ताकि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया।
- इसके विरोधाभास में : पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने ... अपने विषय में परमेश्वर की मनसा को टाल दिया।
- हमें भी : बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते रहना है।। दूसरे लोग यह देखना आरम्भ करेंगे कि आप बाकी लोगों से भिन्न हैं। वे आपकी इज़्ज़त करेंगे और आपका अनुसरण करने लगेंगे।
- परमेश्वर हम सब से 100% प्रेम करते हैं परन्तु कृपा भिन्न है।

''कृपा'' शब्द खारीज़ है, जो ईश्वरीय अनुग्रह या क्षमता है जो वह तब देता है जब वह देखता है कि आप वास्तव में नया जीवन जीना चाहते हैं।

1 कुरिन्थियों 15:10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ (खाली या बेअसर) नहीं हुआ परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी कियाः तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

2 तीमुथियुस 2:20–21 बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन भी होते हैं; कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिये। यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

और जब हम अपने आप को शुद्ध करते हैं, हम कृपा (खारीज़) में बढ़ते हैं – या, और अनुग्रह दिया जाता है कि हम भले कार्यों को पूरा करें।

2 कुरिन्थियों 12:9 और उस ने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे।

अतः अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए – परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी क्षमता, जो हमारी भागीदारी चाहती है – परमेश्वर में शक्ति प्राप्त करते हुए और उसका वचन जो बताता है कि कैसे हमें जीवन जीना है।

जिस प्रकार हमारी उच्च बुलाहट और लक्ष्य है वैसे ही परिक्षाओं, अस्वीकृति आर दुखःभोग के लिए आज्ञाकारिता द्वारा हमारा सही प्रतिउत्तर होना चाहिए जिससे हम बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते जाएं।

xv) हमारा लक्ष्य ''पृथ्वी पर राज करना'' है।

2 तीमुथियुस 2:12 हम उसके साथ राज्य भी करेंगे

प्रकाशितवाक्य 20:6 वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।।

प्रकाशितवाक्य 5:9–10 और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज करते हैं।

* बसेलिया (एकवचन): शाही; अप्रत्यक्षरुप में – शासन; प्रत्यक्ष रुप में – राज्य (शाब्दिक या रुपात्मक रीति मे)

- इसका अर्थ यह है कि हमारा प्रभावित करने का दायरा होना चाहिए – जो हम ने अपनी जीवन शैली से अर्जित किया हो – जिसे हम परमेश्वर द्वारा दिए गए अनुग्रह से पूरा करें।

- बुद्धि, परिपक्वता और अनुग्रह में बढ़ना आपके प्रभाव का दायरा बनाता है तथा ये आपको उस दायरे में अगुवे के रुप में रख देता है।

- हमारा ''राज'' ''दूसरों के ऊपर शासन'' करना नहीं है। ''परमेश्वर के राज्य'' में दूसरों की सेवा करने के लिए यह अनुग्रह और सामर्थ है।

यूहन्ना 13:14 यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए ; तो तुम्हें भी एक दुसरे के पांव धोना चाहिए।

- राजाओं अपने नागरिकों को सुरक्षा, शिक्षा और समृद्धि देने की अगुवाई करता है। आपके प्रभाव का सबसे पहला दायरा आपका परिवार है। जिसमें आप यह आदर्श रखें कि एक सेवक–अगुआ होने के नाते आप उन्हें सुरक्षा, शिक्षा और समृद्धि प्रदान करके किस प्रकार से खराई का जीवन जी रहे हैं।

- इसके लिए आवश्यक है कि आप यह सब देने में सक्षम हों, और यह देने की क्षमता हमें परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा प्राप्त होती है।

भजन संहिता 27:4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।।

नीतिवचन 2:6–7 क्योंकि बुद्धि यहोवा ही देता है; ज्ञान और समझ की बातें उसी के मुंह से निकलती हैं। वह सीधे लोगों के लिये खरी बुद्धि रख छोड.ता है; जो खराई से चलते हैं, उनके लिये वह ढाल ठहरता है।

हमें यह एहसास करना चाहिए कि हम कौन हैं और अपनी उस उच्च बुलाहट की ओर बढ़ते रहें, अपनी सेवा पूरी करें, और अपने लक्ष्य प्राप्त करें।

तथा हमारे को दिए गए उस दर्जे के परिणामस्वरुप, यीशु ने : हमें अपने साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में मसीह यीशु के साथ बैठाया। (इफिसियों 2:6)

प्रशन यह हैः

क) हमें दी गई क्षमता में हम किस स्तर तक चल और जी रहे हैं?

ख) क्या हम राज्य के नियमों का पालन कर रहे हैं? जिन नियमों का हम पालन नहीं करते उन्हें हम लागु भी नहीं कर सकते।

ग) जब हम परमेश्वर के राज्य के नियमों का उल्लंघन करते हैं हम पाप करते हैं, जो हमें अंधकार के राज्य के और उस दुष्ट के अधीनता में कर देता है।

परमेश्वर की इच्छा/चाहत यह है कि आप बद्धि, परिपक्वता और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते जाएं, अपनी स्वेच्छा से उसके समान सोचें और कार्य करें।

VIII राज्य में रहने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने या अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है :

- नीतिवचन 4:23 अपने हृदय की चौकसी पूरे यत्न के साथ कर, क्योंकि उसमें से जीवन का सोता बहता है।
- नीतिवचन 4:23 सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।
- 1 शमूएल 16:7 परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

i) अपने हृदय की चौकसी/ रक्षा पूरे यत्न के साथ कर (नीतिवचन 4:23)। आप उस चीज़ की चौकसी करते हैं जो बहुत महत्वपूर्ण और मुल्यवान होती है।

हृदय बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वो स्रोत है/अलफा/उत्पत्ति है जहां से हमारे सोच, विचार और जीने का ढंग निकलते हैं।

ii) जब हमारा ''नया जन्म'' होता है तब हमें ''नया हृदय'' प्राप्त होता है (यहेजकेल 36:26), जो बेहतर है, जो जीवित है, पूर्ण और ग्रहण करने वाला है और जो पवित्र आत्मा को ग्रहण करता है।

iii) ''नया हृदय'' केन्द्र संयोजक है जहां से तार्किकता (हमारे ज्ञान, विचार, भावनाएं और मनोभाव) का मिलन आत्मिकता से होता है जिसे हम पवित्र आत्मा से पाते और सीखते हैं।

iv) हमारी 'तार्किकता' और 'आत्मिकता' के इस मिलन का परिणाम ''जीवन का मूल सोता'' है (नीतिवचन 4:23) और यह इस बात से निर्धारित होता है कि कौन सी चीज़ बलवन्त है, अधिक प्रभावशील है और किसे हमारी 'इच्छाशक्ति' ज़्यादा चाहती है। हम फिर अपना निर्णय लेते हैं।

यहोशू 23:11 इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की पूरी चौकसी करना।

यहोशू 24:15 आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं ... जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा करूंगा।

व्यवस्थाविवरण 6:5 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

मत्ती 22:37 उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।

v) अतः अपने हृदय की चौकसी करो

यदि मैं कुछ हद तक अपने हृदय की चौकसी करने में सफल होता हूं तो मैं इन बातों का अनुभव करुंगाः

- अपने जीवन में तथा अपने प्रभाव के क्षेत्र में भी राज्यों को भेदना और उन पर विजय प्राप्त करना,दोनों अनदरुनी और बाहरी रुप से।
- बद्धि, परिपक्वता और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ते जाना, जो मेरे प्रभाव के क्षेत्र को बढ़ाएगा, मेरा शासन।

- न सुनने के द्वारा ''**आत्मा को न बुझाओ**''(1 थिस्सलुनीकियों 5:19)

सभी बातों के ऊपर पवित्र आत्मा की यह इच्छा है कि हम ''अपने हृदय की चौकसी करें'' क्योंकि वो उसका घर है। जब कुछ गलत होता है, तो वह हमें चेतावनी देता है। इस चेतावनी की अवेहलना करना आत्मा को बुझाना है।

- अपने हृदय को ''न'' कहना ... आत्मा को बुझाना है।

- परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो(इफिसियों 4:30)। मशीन की चेतावनी बत्ती को नज़र अन्दाज़ करने का परिणाम मशीन खराब हो जाना है – हमारे हृदय की हानि।
  - अन्धकार के राज्य में पाप के द्वारा प्रवेश करना 'पवित्र आत्मा को शोकित करना' है। क्योंकि वह जानता है कि हानि होने वाली है।
  - यदि पैट्रोल में कुछ मिलावट कर दी जाए तो वह गाड़ी को बहुत हानि पहुंचाता है और गाड़ी खराब हो जाती है। इसी प्रकार से हमारे मन और देह के साथ भी होता है। अपने हृदय को किसी अशुद्ध वस्तु से दूषित न करो।

- भजन संहिता 101:3 मैं किसी अनुचित बात को अपनी आंखों के सामने न रखूंगा।
- 2 कुरिन्थियों 6:17 ... अशुद्ध वस्तु को मत छूओ
- 2 कुरिन्थियों 7:1 ... तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।।
- 2 कुरिन्थियों 10:5 हम ... हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

vi) अपनी बुद्धि को नई करो

रोमियों 12:1–2 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरो कों जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। (2) और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

बुद्धि को नया करना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि हमारी बुद्धि हमारे हृदय के साथ सहमति में आ जाए और उसके अनुरुप हो जाए। अतः इस प्रकार हमारे हृदय और बुद्धि के बीच ज़्यादा से ज़्यादा असहमति और असमन्वय को निकाल दें। शान्ति और सम्पन्नता का जीवन होने का परिणाम पवित्र आत्मा के द्वारा अगुवाई होना है।

2 कुरिन्थियों 10:5 सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।

नीतिवचन 23:7 जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।

IX वास्तविकता को सच बनाना – रोमियों 6 का अध्ययन

इन नोट्स को www.treasurehisword.com वेबसाईट से प्राप्त कर सकते हैं।

परमेश्वर आपको आशिष दे

1 कुरिन्थियों 16:13–14 जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरूषार्थ करो, बलवन्त होओ। जो कुछ करते हो प्रेम से करो।।